यस्य च भावेन भावलक्षणम्

जब किसी कार्य के हो जाने पर दूसरे कार्य का होना प्रतीत होता है तब जो कार्य हो चुकता है उसमें सप्तमी होती है,

यथा-

रामे वनं गते दशरथः प्राणान् तत्याज (राम के वन चले जाने पर दशरथ ने प्राण त्याग दिये।)

सूर्ये उदिते कमलं प्रकाशते (सूर्य के उदय होने पर कमल खिलता है)।

सर्वेषु शयानेषु कमला रोदिति (सब के सो जाने पर कमला रोती है)।

सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये

समय और मार्ग का अन्तर बतलाने वाले शब्दों में पञ्चमी और सप्तमी होती है, यथा-

अयं क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विध्येत् (यह एक कोस पर लक्ष्य वेध देगा)।

अद्य भुक्त्वायं व्यहे व्यहाद्वा भोक्ता।

आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् । साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्यप्रते।

संलग्नार्थक शब्दों तथा (युक्तः, व्यापृतः, तत्परः आदि) चतुरार्थक शब्दों (कुशलः, निपुणः, पटुः आदि) के साथ सप्तमी होती है, यथा-

कार्ये लग्नः, तत्परः ।

शास्त्रे निपुण: दक्षः प्रवीणः आदि ।

षष्ठी चानादरे

जिसका अनादर करके कोई कार्य किया जाता है, उसमें षष्ठी या सप्तमी होती है. यथा-

निवारयतोऽपि पितुः निवारयत्यपि पितरि वा रमेशः अध्ययनं त्यक्तवान् (पिता के मना करने पर भी रमेश ने पढ़ना छोड़ दिया।)

वैषयिकाधार में सप्तमी-

स्निह् , अभिलष् , अनुरंज् आदि स्नेह, आसक्ति तथा सम्मानवाचक शब्दों के साथ जिसके लिए स्नेह, आसक्ति तथा सम्मान प्रदर्शित किया जाता है, वह सप्तमी में रखा जाता है, यथा-

किन्नु खलु बालेऽस्मिन् स्निह्यति मे मनः (मेरा मन इस बालक को क्यों प्यार करता है!)

न तापसकन्यायां शकुन्तलायां ममाभिलाषः (मुनिकन्या शकुन्तला से मेरा स्नेह नहीं है)।

देवे चन्द्रगुप्ते दृढमनुरक्ताः प्रकृतयः (चन्द्रगुप्त के प्रति प्रजा का बहुत बड़ा अनुराग है)।

√युज् धातु के साथ तथा √युज् से प्रत्यय द्वारा निष्पन्न शब्दों के साथ सप्तमी होती है, यथा-

असाधुदर्शी भगवान् काश्यपो य इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते (पूज्यपाद काश्यपजी महाराज बुद्धिमान् नही हैं, जिन्होंने इसे आश्रम के कार्यों में लगा रखा है)।

'योग्यता' अथवा 'उपयुक्तता' आदि अर्थों का बोध कराने वाले शब्दों के योग में उस व्यक्ति का वाचक शब्द सप्तमी में रखा जाता है, जिसके विषय में 'योग्यता' अथवा 'उपयुक्तता' प्रकट की जाती है, यथा-

युक्तरूपमिदं त्वयि (यह तुम्हारे लिए योग्य है)।

त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं तस्मिन् युज्यते (तीनों लोकों का भी राज्य उसके लिए उपयुक्त है)।

ते गुणाः परस्मिन् ब्रह्मणि उपपद्यन्ते (वे गुण परब्रह्म के लिए उपयुक्त है)।

जब कारणवाची शब्द का प्रयोग होता है तब कार्य सप्तमी में रखा जाता है, यथा-